गया था कि जब उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार थी तब सिंह उप्र विकास परिषद के अध्यक्ष थे। यह पद कैबिनेट मंत्री के समकक्ष होता है। त्रिपाठी ने आरोप लगाया था कि इस पद पर रहते हुए सिंह ने कई कागजी कंपनियां खड़ी कीं और धन शोधन में लिप्त रहे। पीठ ने कहा कि धन शोधन वित्तीय प्रणाली के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करता है। यह देश में ऐसी समानान्तर वित्त प्रणाली के तौर पर उभर सकता है जिसका निरांत्रण गिने चुने लोगों के पास होता है। इससे अच्छी खासी अर्थव्यवस्था अस्थिर और ठप हो सकती है। अदालत ने कहा ''हमारी राह दृढ़ राय है कि यह अतिविशिष्ट अधिकार के दुरुपयोग का मामला है और स्पेशल सेल से इसकी गहन जांच कराने की जरूरत है।'' पीठ ने इस तथ्य पर ध्यान दिया कि जो कंपनियां कथित तौर पर कागजी कंपनियां थीं, वे विभिन्न राज्यों में पंजीकृत थीं। पीठ ने कहा कि एक केंद्रीय एजेंसी होने के नाते प्रवर्तन निदेशालय इस मामले की गहन जांच करने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। अदालत ने कहा ''इसलिए, यह आदेश दिया जाता है कि इस मामले से संबंधित समस्त दस्तावेज दो सप्ताह में प्रवर्तन निदेशालय को सौंप दिए जाएं और दस्तावेज मिलने के तत्काल बाद प्रवर्तन निदेशालय को जांच शुरूकर देना चाहिए। दस्तावेज मिलने के एक माह के भीतर प्रवर्तन निदेशालय पीठ के सामने एक स्थिति पत्र पेश कर दे।'' अदालत के आदेशनुसार इस मामले को जुलाई के पहले सप्ताह में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया है और तब अधिकारी स्वयं अदालत में पेश हो कर पहला स्थिति पत्र सौंपें।

अमर सिंह के खिलाफ कानपुर के बाबू पुरवा थाने में दर्ज एफआईआर में आरोप लगाया गया था कि सपा सरकार के पांच साल के शासन में १६ से १६८ कंपनियां बनाकर सपा के पूर्व महासचिव अमर सिंह और उनकी पत्नी पंकजा ने पांच सौ करोड़ का घोटाला किया। इन कंपनीयों में बिग बी अमिताभ बच्चन से लेकर घाटमपुर के किसान तक को निदेशक बनाया था। यही नहीं यूपी, दिल्ली और कोलकाता के दो दर्जन से अधिक ऐसे लोग हैं, जिन्हें मालूम ही नहीं कि वे किसी कंपनी के निदेशक भी हैं। बाबूपुरवा थाने में यह एफआईआर शिवाकांत त्रिपाठी ने अक्टूबर २००९ को दर्ज कराई थी। वर्ष २००३ से २००७ के बीच अमर ने जो कम्पनियां बनाईं उनमें एनर्जी डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड, ईडीसीएल पॉवर लिमिटेड, पंकजा आर्ट एंड क्रेडिट लिमिटेड, सर्वोत्तम कैंप लिमिटेड, ईडीसीएल इंफ्रास्टक्चर लिमिटेड व ईस्टर्न इंडिया लिमिटेड प्रमुख हैं। बाकी कंपनियां काले धन को सफदे करने के लिए बनाई गई थीं।

याचिकाकर्ता का कहना था कि इन कंपनियों के अलग-अलग निदेशक बनाए गये थे। एक कंपनी में अमिताभ बच्चन निदेशक थे। दो में घाटमपुर के अमौर गांव निवासी देवपाल सिंह राणा और गाजियाबाद निवासी उसका भाई निदेशक था। दिल्ली और कोलकाता के दो दर्जन लोगों के फर्जी हस्ताक्षर से कंपनियों का निदेशक बनाया गया। जब देवपाल सिंह राणा से पूछा गया तो उन्होंने कंपनी के बारे में जानकारी से इंकार कर दिया। याचिकाकर्ता का कहना था कि पहले कंपनियां बनाई गईं, फिर इन्हें घाटे में दिखाकर अमर और पंकजा की कंपनियों में विलय कर दिया गया। सर्वोत्तम कैंप लिमिटेड में २५ छोटी कंपनियों का विलय किया गया। अमर सिंह और पंकजा सहित कंपनी के निदेशक अमिताभ बच्चन व नोएडा की फैक्स कंपनी के निदेशक अशोक चतुर्वेदी के खिलाफ धोखाधड़ी (४२०/४६७/४७१) १२० बी, भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम ७/८/९/१०/१३ तथा मनी लांड्रिंग एक्ट ३/४ के तहत क्राइम नंबर ४५८/२००९ पर एफआईआर दर्ज कराई थी।

माया राज के शुरुआती दौर में कानपुर में एफआईआर दर्ज होने पर काफी बवाल भी मचा था। सपा मुखिया मुलायम सिंह ने बसपा सरकार पर राजनीतिक विद्वेष के चलते अमर सिंह और अमिताभ बच्चन को फंसाने का आरोप लगाया। अधिकतर कंपनियां कोलकाता से रजिस्टर्ड हुई थीं इसलिए शासन के निर्देश पर विवेचना के लिए मामला वहां स्थानांतरित कर दिया गया। बाबूपुरवा के तत्कालीन इंसपेक्टर दिनेश त्रिपाठी कागजात लेकर कोलकाता गये लेकिन वहां पुलिस ने विवेचना ग्रहण करने से इंकार कर दिया। बाद में विवेचना बाबूपुरवा थाना की पुलिस को ही सौंप दी गई थी। फिर यह मामला आर्थिक अपराध अनुसंधान शाखा को स्थानांतरित कर दिया गया था।

बहरहाल, जो हालात बन गए हैं उससे इतना तो तय ही है कि बीमारी से परेशान अमर सिंह को आने वाले दिनों में एक साथ कई मोर्चो पर लड़ना होगा। विवादित छवि और बडबोले पर के कारण ही उन्हें कोई भी राजनैतिक दल अपने साथ लेने को तैयार नहीं है। लोकमंच के सहारे वह अपनी राजनैतिक हैसियत बनाए रखना चाहते हैं लेकिन मंच को राजनैतिक जमीन ही नहीं मिल पा रही है। पूर्वांचल में वह अपनी ताकत बढ़ाना चाहते थे, लेकिन उनसे बेहतर स्थिति में तो 'पीस पाटी' नजर आती है। छवि खराब होने के बाद उनके उद्योगपति, बॉलीबुड के फिल्मी और राजनैतिक दोस्त सभी किनारा करने लगे हैं।

अब वह किसी मंच पर नहीं दिखाई देते हैं। उनसे जब इस संबंध में पूछा जाता है तो वह तबियत खराब होने के कारण ऐसे मंचों से दूर रहने की बात कहते हुए पल्ला झाड़ लेते हैं। चारों तरफ से घिरे अमर आजकल सोनिया गांधी की शान में कसीदे पढ़ने में लगे हैं। उनको अपनी राजनैतिक हैसियत बचाए रखने के लिए कांग्रेस के अलावा कोई प्लेटफार्म नजर नही आ रहा है। कांग्रेस का साथ मिलने पर अमर की कई परेशानियां कम हो सकती हैं, यह बात भी वह जानते हैं। पिछले दिनों तो यहां तक चर्चा चली थी कि अमर सिंह अपने लोकमंच का कांग्रेस में विलय करने वाले हैं, लेकिन कुछ कांग्रेसियों के चलते मामला लटक गया।

अमर 'वाणी'

चेहरा जनता के सामने

Amar Singh & Bipasha Basu Conversation:

Amar:	**Hello.**
Bipasha: :	**(Sing song voice)...Haallloooo..**
Amar: :	**Hello...**
Bipasha:	**: (Sing song voice) Hi...how are you...?**
Amar: :	**(Happy sing song voice) I am fine.**
Bipasha: :	**How've you been? We are talking after a long time right?**
Amar: :	**Yes...**
Bipasha: :	**You've been busy or something?**
Amar: :	**Kaun...bip...**
Bipasha: :	**Bipasha...Bipasha...ya...I saw you twice at that award function...ha ha ha**
Amar: :	**Really?**
Bipasha: :	**So tell me...when are you meeting me?**
Amar: :	**Where do you want to meet baby? I have been very busy.**
Bipasha: :	**You busy?**
Amar: :	**It is very tough.**
Bipasha: :	**It is very tough...ha ha ha...OK.**
Amar: :	**But I will make some time.**
Bipasha: :	**OK sweetie...**
Amar: :	**Very nice of you to have remembered me.**
Bipasha: :	**(Laughs) I toh always remember you.**
Amar: :	**An old man like me.**
Bipasha: :	**Sorry...**
Amar: :	**An old fossil like me...**
Bipasha: :	**Old fossil like you...**
Amar: :	**ya ya...**
Bipasha: :	**I don't think age really matters... Does it?**
Amar: :	**It matters between the legs na?**
Bipasha: :	**(Bursts out laughing) Oh God...ha ha ha ha...all right then...you try removing time now... it's been almost a month now I've not met...**
Amar: :	**Ya we will meet.**
Bipasha: :	**OK... Right, keep in touch. Bye...**